International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

पूर्वकालीन भारत में शैक्षणिक व्यवस्था एवं शैक्षणिक केन्द्रों की महत्ता

[1] डॉ. (श्रीमती) शारदा अग्रवाल,
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षा,
इतिहास विभाग, डी.वी.सी., उरई

[2] शिवम्, शोधार्थी, इतिहास विभाग, बुन्देलखण्ड़ विश्वविद्यालय, झाँसी

प्रस्तावना

विश्व की सभ्यताओं में सर्वप्रथम भारत में ज्ञान, विज्ञान तथा विद्याओं का प्रचलन था। गुरु के आश्रम, मठ, विहार, विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालयों के रूप में शिक्षा के स्थान थे। छात्र इन आश्रमों में जीवन की सर्वोच्च शिक्षा ग्रहण करते थे। यहां आश्रमों के वातावरण से आकषित होकर देश तथा विदेश के हजारों छात्र ज्ञानार्जन के लिए आते थे। संस्था के आचार्य या कुलपति का संबंध शिष्य–प्रशिष्य प्रणाली के द्वारा प्रत्येक छात्र से था। विभिन्न विषयें के विद्वान आचार्य अपनी परिषद के द्वारा शिक्षा–संबंधी तथा जीवन–निर्वाह संबंधी व्यवस्था का संचालन करते थे। यद्यपि उनके संरक्षण का समस्त भार उस समय की शासन व्यवस्था पर था, तथापि शिक्षा में राज्य का कोई हस्तक्षेप नहीं था। प्राचीन भारत में शिक्षा के प्रसार को तत्कालीन समय स्थापित शिक्षा केन्द्रों के माध्यम से एवं कालान्तर अनुसार व्यक्त किया जा सकता है यथाः तक्षशिला विश्वविद्यालय वर्तमान पश्चिमी पाकिस्तान की राजधानी रावलपिंडी से 18 मील उत्तर की ओर स्थित था। श्री राम के भाई भरत के पुत्र तक्ष ने उस नगर की स्थापना की थी। यह विश्व का प्रथम विश्वविद्यालय था जिसकी स्थापना 700 वर्ष ईसा पूर्व में की गई थी। यहां पूरे विश्व में 10,500 से अधिक छात्र अध्ययन करते थे। यहां 60 से भी अधिक विषयों को पढ़ाया जाता था। उस समय के चिकित्सा शास्त्र का यह एकमात्र सर्वोपरि केन्द्र था। तक्षशिलाा विश्वविद्यालय का विकास विभिन्न रूपों में हुआ था। इसका कोई एक केन्द्रीय स्थान नहीं

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

था, अपितु यह विस्तृत भू भाग में फैला हुआ था। विविध विद्याओं के विद्वान आचार्यों ने यहां अपने विद्यालय तथा आश्रम बना रखे थे। छात्र रुचिनुसार अध्ययन हेतु विभिन्न आचार्यों के पास जाते थे। वेद–वेदान्त, अष्टादश विद्याएं, दर्शन, व्याकरण, अर्थशास्त्र, राजनीति, युद्धविद्या, शस्त्र संचालन, ज्योतिष, आयुर्वेद, ललित कला, हस्तविद्या, अश्व विद्या, मन्त्र विद्या, विविध भाषाएं, शिल्प आदि की शिक्षा विद्यार्थी प्राप्त करते थे।

''विश्व का सबसे प्राचीन और विद्या का सबसे महान केन्द्र नालंदा विश्वविद्यालय लगभग सात सौ वर्षों तक जगमगाता रहा और ज्ञानकेन्द्र के रूप में संसार में प्रसिद्ध बना रहा। साथ ही इसके माध्यम से भारतीय संस्कृति तथा ज्ञान का प्रसार बर्मा, थाईलैंड, इंडोनेशिया, कोरिया, चीन, जापान, मंगोलिया, तिब्बत सहित दुनियाभर मे होता रहौ। भारतीय ज्ञान–विज्ञान के मूल स्त्रोत नालंदा में अध्ययन किए बिना शिक्षा अधूरी मानी जाती थी।'' नालंदा विश्वविद्यालय बिहार में राजगीर के निकट था और उसके अवशेष बडगांव नामक गांव के आस–पास तक बिखरे हुए हैं। पहले इस जगह बौद्ध विहार थे। इनमें बौद्ध साहित्य और दर्शन का विशेष अध्ययन होता था। नालंदा विश्वविद्यालय का एक मील लंबा और आधा मील चौड़ा क्षेत्र एक विशाल और सुदृढ चार दीवारी से घिरा हुआ था। डॉ. जयशंकर मिश्र के अनुसार ''विद्यार्थियों से किाी प्रकार का शुल्क नहीं जिया जाता था। उनके आवास और भोजन तक की व्यवस्था निःशुल्क की जाती थी। राजाओं और धनी सेठों द्वारा दिये गये दान से इस विश्वविद्यालय का व्यय चलता था।

विक्रमशीला विश्वविद्यालय के छात्रों को भी सारी सुविधाएं निःशुल्क दी जाती थी। धर्मपाल ने इस विश्वविद्यालय में उस समय के विख्यात दस आचार्यों की नियुक्ति की थी। छः विद्यालय बनाये गये थे। प्रत्येक विद्यालय का एक पंडित होता था, जो प्रवेश परीक्षा लेता था। परीक्षा में उत्तीर्ण छात्राों को ही प्रवेश मिलता था। प्रत्येक विद्यालय में 108 शिक्षक थे। इस प्रकार कुल शिक्षकों की संख्या 648 बताई जाती है। विक्रमशिला विश्वविद्यालय में दसवीं शताब्दी में प्रत्येक द्वार के अलग पंडित थे। पूर्वी द्वार पंडित रत्नाकर शांति, पश्चिमी द्वार के प्रज्ञाकर मित्रा थे। विश्वविद्यालय के छात्रों की संख्या का सही अनुमान प्राप्त नहीं हो पाया है। 12 वीं शताब्दी में यहां 300 छात्रों के होने का विवरण प्राप्त होता

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

है। मुख्यतः बौद्ध साहित्य के अध्ययन के साथ–साथ वैदिक साहित्य के अध्ययन का भी प्रबंध था। अन्य विषय भी पढ़ाये जाते थे। बौद्धों के वज्रयाद संप्रदाय के अध्ययन का यह प्रामाणिक केन्द्र रहा।

उड्उन्तपुर विश्वविद्यालय की स्थापना पाल वंश के प्रवर्तक तथा प्रथम राजा गोपाल ने की थी। इसकी स्थापना भी बौद्ध विहार के रूप में हुई थी। आज यहां बिहार शरीफ नगर है। पहले यह क्षेत्र मगध के नाम से जाना जाता है। 12 वीं शताब्दी में यह शिक्षा का अच्छा केन्द्र था। यहां हजारों अध्यापक और छात्र निवास करते थे। खिलजी ने सभी की क्रूरतापूर्ण हत्या कर दी। जब सभी आचार्य एवं छात्र मारे गये तब जाकर अफगानों का इस पर अधिकार हो पाया।

प्राचीन शिक्षा केन्द्रों एवं शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकताएँ

प्राचीन शिक्षा केन्द्रों की आवश्यकता एवं शिक्षा व्यवस्था या पद्धतियों का विश्लेषण इस क्षेत्र में विशेष महत्ता रखता है, अतएव् उपर्युक्त तथ्यों की विशिष्टता को अग्रलिखित तथ्योंन्तर्गत स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

मनुष्य की धार्मिक प्रवृत्तियों का उत्थान करना– प्राचीन भारत का संपूर्ण जीवन धर्म पर आधारित था। राष्ट्रीय जीवन में धर्म को जीवन पद्वति से जोड़ने का सफल प्रयत्न किया गया था। हमरे ऋषि–मुनियों ने जिन वैाज्ञानिक तथ्यों की खोज की, उन्हें भी धर्म के आवरण में समाज के समक्ष प्रस्तुत किया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि वृक्ष पूजा, प्रकृति, यज्ञ आदि तथ्य धर्म के नाम पर प्रस्तुत किए गए। धर्म के विद्वानर पुरोहितों को आचार्यो के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई । सभी प्रकार की शिक्षाएं जिस देवता के नाम से प्रारंभ होती थी, उन श्री गणेश को बुद्धि ओर विद्या का ही देवता बताया गया है।

चरित्र निर्माण में – भारत के संपूर्ण संस्कृत सहित्य में चरित्र को अत्यधिक महत्व दिया गया है। कई स्थानों पर ऐसा उल्लेख है कि यदि वेद पुराण आदि सब पढ़े हों लेकिन चरित्र ठीक नहीं हो तो व्यक्ति मणि धारण करने वाले सर्प के समान भयंकर होता है। इसलिए चरित्र का निर्माण और चरित्र की स्थापना प्राचीन भारत में शिक्षा के प्रमुख

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

उद्देश्यों में सम्मिलित किया गया था। इस बात के दर्शन हमें विभिन्न स्थानों पर प्राप्त होते हैं।

सामाजिक उत्तरदायित्वों हेतु– भारतीय संस्कृति की यह मान्यता रही है कि यदि व्यक्ति शिक्षित और ज्ञानवान है तो उसमे अपने सामाजिक दायित्वों को निष्ठापूर्वक निर्वहन करना चाहिए। निर्वहन करने की यह परम्परा व्यक्ति के लिए प्रत्येक स्तर पर लागू और अनिवार्य मानी गई है। यह अपेक्षा की जाती है कि वह समाज में किसी भी भूमिका में हो, अपने सामाजिक दायित्वों का पूर्ण पालन करेगा और निर्वहन करेगा। उपनिषदों में ऐसा उल्लेख आता है कि किसी भी रूप में प्रमाद नहीं करना चाहिए और अन्याय तथा दोषरहित कार्यो से बचना चाहिए।

सांस्कृतिक जीवन का विकास– प्राचीन काल की संस्कृति को वर्तमान में जीवित रखने का एकमात्र उपाय शिक्षा है। शिक्षा के माध्यम से ही संस्कृति को जीवित रखना प्राचीन भारत की परम्परा रही है। प्राचीन ऋषियों में वैदिक ज्ञान के साथ अन्य विषयों की शिक्षा देने का सफल प्रयत्न किया। यह सत्य है कि वैदिक मंत्रों को कंठस्थ करना, उन्हें मस्तिष्क में सुरक्षित रखना ओर पीढ़ियों में उनका हस्तांतरण करना –प्राचीन भारत की अनुपम विशेषता थी। इस विशेषता के कारण ही संस्कृति का प्रभाव लगातार बनता चला गया।

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध प्रपत्र पूर्व कालीन 'भारतीय शैक्षणिक व्यवस्था एवं शैक्षणिक केन्द्रों की महत्ता' का उद्देश्य अग्रलिखित बिन्दुवर वर्णित है:

1 भारतीय इतिहास के प्रारम्भ के प्रमुख प्राचीन शिक्षा केन्द्रों एवं उनकी शैक्षणिक व्यवस्था गहनतापूर्वक विश्लेषण करना।

2 पूर्वकालीन भारत के प्रमुख प्राचीन शिक्षा केन्द्रों में शैक्षणिक पद्धति एवं इसके प्रसार का अध्ययन करना।

3 भारत के प्रमुख प्राचीन शिक्षा केन्द्रों या विश्वविद्यालयों का वर्तमान भारतीय शैक्षणिक विकास में महत्वता का अध्ययन करना।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

साहित्य का पुनरावलोकन

प्राचीन भारतीय शिक्षा केन्द्रों से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करने हेतु ग्रन्थों की एक लम्बी श्रंखला उपंलब्ध है। इनमें उदयनारायण राय की प्राचीन भारत के नगर तथा नागरिक जीवन, अमलानन्द घोष की नालन्दा, स्टुअर्ट पिग्गट की सम एन्शियन्ट ऑफ इण्डिया, जान मार्शल की ए गाइड टू तक्षशिला आदि प्रमुख है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति का वर्णन करने वाले भी अनेक ग्रन्थ उपलब्ध है। इस क्षेत्र में ठाकुर प्रसाद शर्मा की हुएनत्सांग का भारत– वृत्तान्त, ए.एल. बाशम की द कल्चर्ल हिस्ट्री आफ इण्डिया, बी. जी. गोखले की प्राचीन भारत की इतिहास एवं संस्कृति आदि महत्वपूर्ण है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा से सम्बन्धित कई शोध कार्य भी हो चुके है। इनमें मीनाक्षी चौहान का प्राचीन भारत के शिक्षा के प्रमुख केन्द्र का एक अध्ययन तथा अजय विजय कौर का वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था एक अध्ययन आदि प्रमुख है।

इन शोधों एवं ग्रन्थों में प्राचीन भारत की शिक्षा का स्वरूप, प्रसार, क्षेत्र एवं शिक्षा के केन्द्रों आदि के विषय में वर्णन किया गया है। परन्तु मुख्यतः प्राचीन भारतीय शिक्षा का भारत एवं विश्व के अन्य देशों के विज्ञान एवं संस्कृति पर प्रभाव का अध्ययन के क्षेत्र में बहुत कम काम हुआ है, अतएव् प्रस्तुत शोध प्रपत्र इस दिशा में नवीन प्रकाश ड़ालता है।

शोध–सार

निष्कर्ष रूप में यह कह सकते है पूर्वकालीन भारतीय शैक्षणिक केन्द्र एवं शैक्षणिक व्यवस्था के स्वरूप ने ही हमें शिक्षा के वास्तविक धरातल से अवगत कराया है। हम सभी जानते हैं कि मनुष्य के जन्म और विकास की स्थिति ने शिक्षा के महत्व को सदैव प्रकाशित किया है। उसके मानसिक एवं सांस्कृतिक विकास की अपार संभावनाओं ने शिक्षा के महत्व को बढ़ाने के साथ–साथ, शिक्षा और जीवन के सम्बन्ध को और घनिष्ट बनाया है। प्राचीन शिक्षा और जीवन के इस सम्बन्ध को और महत्वपूर्ण व प्रभावी बनाती है, सुव्यवस्थित शिक्षा केन्द्र, जिसके द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास कार्य सुचारू रूप से क्रियान्वित होना संभव

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

बन पाता है। अतएव भारत के इतिहास पर दृष्टिवत् करने से ज्ञात होता है कि भारत के प्रारम्भ से ही शिक्षा को उच्च दर्जा प्राप्त था एवं समय–समय पर यथाउचित केन्द्र स्थापित होते गये, जिनसे न केवल भारतीय मानकता को उच्च स्थान प्राप्त हुआ वरन् इन शैक्षणिक केन्द्रों व व्यवस्था से सम्पूर्ण विश्व कहीं न कहीं लाभान्वित हुआ हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. घोष, एस.सी. – द हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन एन्शियन्ट इण्डिया, 3000ई. पू.–1192 ई. नई दिल्ली, 2001
2. बाशम, ए.एल. – दइ कल्चर्ल हिस्ट्री आफ इण्डिया, आक्सफोर्ड , 1965
3. बोस, पी. एल. – इण्डिन टीचर्स ऑफ द बुद्विस्ट यूनीवर्सिटीज, मद्रास, 1923
4. बोस, पी. एल. – इण्डिन टीचर्स ऑफ द बुद्विस्ट यूनीवर्सिटीज, मद्रास, 1923
5. कौटिल्य का अर्थशास्त्र, पाणिनी का अष्टाध्यायी, पतंजली का महाभाष्य, वाणभट्ट का हर्षचरित्र विल्हण का विक्रमांकदेवचरित, मतृहरि का नीतिशतक, भूवभूति का मालतीमाधव, चरक का चरक संहिता
6. मार्शल, जॉन – ए गाइड टू तक्षशिला, कैब्रिज, 1966
7. मार्शल, जॉन – ए गाइड टू तक्षशिला, कैब्रिज, 1966
8. पिग्गट, स्टुअर्ट – सम एन्शियन्ट सिटीज ऑफ इण्डिया, ऑक्सफोर्ड,1945
9. राय, उदयनारायण – प्राचीन भारत के नगर तथा नागरिक जीवन, इलाहाबाद, 1965
10. दीघनिकाय : अनुवादक, राहुल सांस्कृत्यापन, भिक्षु जगदीश कश्यप, सारनाथ, वाराण्सी, 1936 ।
11. दत्त, सुकुमार – बुद्धिस्ट मोन्क एण्ड मोनास्ट्रिज ऑफ इण्डिया, दिल्ली, 1988
12. चौवे, सरयूप्रसाद – भारतीय शिक्षा का इतिहास, इलाहाबाद , 1959
13. त्यागी, अनिल – एजुकेशनल इन्टीट्यूट इन एन्शियन्ट इण्डिया, नई दिल्ली, 2001
14. अग्निहोत्र, प्रमुदयाल – पतंजलिकालीन भारत, पटना, वि.स. 2019
15. आप्टे, डी.जी. – यूनीवर्सीटीज इन एनशियन्ट इण्डिया, बडौदा
16. गोखले, बी.जी. – प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, वम्बई 1957